P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817

Remarking
Vol-II * Issue-VIII* January- 2016

प्रेमचन्द की नारी दृष्टि

शम्भु लाल मीना
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
पं.न.कि.श. राज. स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, दौसा

सारांश

प्रेमचंद नारी को विशेष महत्ता देते हुए उसे पुरुष से श्रेष्ठ मानते हैं। उनके मतानुसार नारी में सेवा, त्याग, वात्सल्य, प्रेम. मातृत्व, संयम, विनय, सहिष्णुता आदि गुण होते हैं। पुरुष में यदि नारी के गुण आ जाये तो वह देवतुल्य हो जाता है और यदि नारी में पुरुष के गुण आ जाये तो वह नारीत्व से गिर जाती है। प्रेमचंद को भारतीय संस्कृति से परिपूर्ण शिक्षित नारी विशेष प्रिय है। वे संपत्ति में नारी और पुरुष के समान अधिकार के समर्थक है। नारी और पुरुष को वे एक दूसरे का पूरक मानते हैं।

मुख्य शब्द : कुलटा (व्यभिचारिणी स्त्री), मातृत्व, अबला, आर्यरमणी, नव्यसभ्यता, मिश्रित।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द से पूर्व नारी के प्रति हिन्दी उपन्यासों में स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं था। नारी को आमोद–प्रमोद के रूप में देखा जाता था। रीतिकालीन मानसिकता से ज्यादा बदलाव नहीं आया था। प्रेमचन्द ने धर्म सुधार आन्दोलन से प्रभावित होकर अपने उपन्यासों में नारी पात्रों की सृष्टि की है जो भारत की गौरवास्पद आदर्श स्त्री है।

प्रेमचन्द के समय में बाल–विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह आदि कुप्रथाएँ प्रचलित थी। प्रेमचन्द के समय स्त्रियों और पुरूषों में सामाजिक और कानूनी दृष्टि से बहुत अंतर था। पुरूष अपनी पत्नी के जीवित रहते हुए भी कई विवाह कर सकता था, किन्तु स्त्री के बाल विधवा होने पर भी पुनर्विवाह करना पाप समझा जाता था। स्त्री शिक्षा, स्वतंत्रता, सांपत्तिक उत्तराधिकारों स वंचित थी। उसकी सारी शक्तियाँ केवल एक मनुष्य अथवा एक परिवार तक सीमित थी। प्रेमचन्द ने लिखा है –'गहने ही स्त्री की सम्पत्ति होते हैं। पति की और किसी सम्पत्ति पर उसका अधिकार नहीं होता। उसे इन्हीं का बल और गौरव होता है।'[1]

प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में नारी को विशेष महत्ता दी है। प्रेमचन्द नारी को, उसकी महानता और दैवीय गुणों के कारण पुरूषों से श्रेष्ठ मानते हैं। उनकी दृष्टि में सेवा और वात्सल्य नारी की मूल प्रवृति है और प्रेम उसके जीवन का आधार । नारी में वात्सल्य की इतनी प्रधानता है कि यह कहा जाये कि वह केवल माता है, इसके अतिरिक्त वह जो कुछ है वह मातृत्व का उपक्रम मात्र है तो अतिश्योक्ति न होगी। प्रेमचन्द के अनुसार नारी चरित्र में अवस्था के साथ मातृत्व का भाव दृढ होता जाता है। यहाँ तक एक समय ऐसा आता है जब नारी की दृष्टि में युवक मात्र पुत्र तुल्य हो जाते हैं। उसके मन में विषयवासना का लेश भी नहीं रहता। पुरूषों में ऐसी स्थिति कभी नहीं आती , उनकी कामेन्द्रियॉ क्रियाहीन भले ही हो जाए पर विषय वासना सम्भवतः और भी बलवती हो जाती है।'[2]

'प्रेमाश्रम' का ज्ञान प्रकाश, 'निर्मला' का तोताराम 'भूत' कहानी के पंडित जी और 'गोदान' के मि0खन्ना तथा भोला, प्रेमचन्द के इस कथन की पुष्टि करते हैं।

प्रेमचन्द नारी को सेवा, त्याग, आत्मसमर्पण, पवित्रता, स्नेह, वात्सल्य, संयम, विनय, क्षमा, धैर्य, सहिष्णुता, लज्जा, आत्माभिमान आदि सुन्दर और उदात्त भावों की साक्षात् मूर्ति मानते हैं। उनके अनुसार–नारी में यदि पुरूष के गुण आजायेंगे तो वह कुलटा हो जायेगी, यदि पुरूष में नारी के गुण आजायेंगे तो वह देवता बन जायेगा। प्रेमचन्द नारी की सार्थकता 'मनुष्य' को ऊँचा उठाने और मनुष्य के मन में ऊँचे विचार पैदा करने में मानते हैं। नारी जितनी ही त्यागमयी है पुरूष उतना ही संशयावलम्बी एवं स्वार्थसाधक है। प्रतिज्ञा की 'प्रेमा' गोदान की 'गोविन्दी', रंगभूमि की 'सुभागी' निर्मला की 'निर्मला' अपने पति की संशयवृति के कारण दुःखी रहती है। प्रेमचन्द के मतानुसार–'वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्हीं आधारों पर सृष्टि थमी हुई है और ये स्त्रियों के गुण है।'[3]

प्रेमचन्द का मानना है कि नारी अबला नहीं है वह पुरूष की प्रेरणास्रोत है। गोदान की मिस मालती मेहता से अधिक प्रभावी है।

प्रेमचन्द एक स्तर पर नारी और पुरूष को समान मानते ह। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व गौण है, पुरूष सम्पर्क पाकर ही नारी ऊपर उठती है। पुरूष स्त्री का स्वामी है तो स्त्री पुरूष की स्वामिनी है। इस उद्देश्य से उन्होंने 'वरदान' की माधवी, 'प्रेमाश्रम' की गायत्री 'रंगभूमि' की सोफिया, इन्दु, जाह्नवी, कायाकल्प की मनोरमा 'सेवा सदन' की सुमन, 'गबन' की जालपा 'कर्मभूमि' की सुखदा, गोदान की गोविन्दी, धनिया, मालती आदि नारी पात्रों की सृष्टि की है। प्रेमचन्द का मानना है कि –"'संसार' में सबसे बड़े अधिकार सेवा और त्याग से मिलते हैं और वे नारो जाति को मिले हुए हैं।"[4]

प्रेमचन्द ने पति प्रेम को स्त्री के लिए आवश्यक माना है– सच्ची आर्य रमणी कुल प्रतिष्ठा पर मर मिटने वाली होती है। उसके प्रेम का अर्थ है पति प्रेम। यदि स्त्री को अपने जीवन में पति का प्यार न मिले तो उसका जीना निरर्थक है।[5]

प्रेमचन्द के मन म नारियों के प्रति बहुत सहानुभूति थी। वे नारी की शोचनीय स्थिति में हृदय से सुधार चाहते हैं। बाल विवाह अनमेल विवाह और दहेज की कुप्रथा को दूर कर विधवा के पुनर्विवाह के समर्थक थे। आधुनिक शिक्षित नारी का उन्होंने कहीं भी विरोध नहीं किया है किन्तु पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण का उन्होंने विरोध किया है। इस प्रकार उनके नारी पात्रों में पुरातन और नवीन का सुन्दर सामंजस्य उपलब्ध होता है।

शिक्षा के द्वारा ही नारी का सर्वांगीण विकास संभव है–'जब तक सब स्त्रियाँ शिक्षित नहीं होगी और सब कानूनी अधिकार उनको बराबर न मिल जायेंगे तब तक महज बराबर काम करने से ही काम नहीं चलेगा।'[6] स्त्रियों के सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उत्थान के लिये प्रेमचन्द उनको अनिवार्य शिक्षा के साथ–साथ समानाधिकारों के प्रस्तावों का सदैव अनुमोदन करते हैं। प्रेमचन्द स्त्री स्वतंत्रता के भी पूर्ण समर्थक रहे हैं। उन्होंने पर्दा प्रथा का भी घोर विरोध किया है –'मैं तुमसे कहता हूँ परदा क्यों नहीं छोड़ती?[7] प्रेमचन्द नारी को नौकरी करवाने के पक्षपाती नहीं थे। अपनी पत्नी से वार्तालाप में उन्होंने कहा– स्त्रियाँ नौकरियाँ करने लगी है मगर यह अच्छा नहीं है, मैं इसको अच्छा नहीं समझता।'[8] पढ़ी–लिखी नारी दर–दर की ठोकरे खाती रहे यह उन्ह पसन्द नहीं है।

प्रेमचन्द नौकरी द्वारा स्त्री के आत्म–निर्भर बनने की बात को ज्यादा महत्त्व नहीं देते । वे पुरूष व स्त्री को समाज की एक इकाई मानते है। जहाँ मेरे–तेरे का प्रश्न नहीं उठना चाहिए। सम्पत्ति पर दोनों का समान अधिकार माना जाना चाहिए। प्रेमचनद ने विवाह को नारी व पुरूष दोनो के लिए अनिवार्य माना है। प्रतिज्ञा में प्रो0दीनानाथ कहते है –'मैने कभी अविवाहित जीवन को आदर्श नहीं समझा। वह आदर्श हो ही कैसे सकता है ? अस्वाभाविक वस्तु कभी आदर्श हो ही नहीं सकती।[9]

प्रेमचन्द नारी सौन्दर्य प्रदर्शन के लिए कृत्रिम आभूषणों की बजाय उसके उत्तमशील व गुणों को महत्त्व देते है। 'गबन' में उन्होंने जालपा की अतिशय आभूषण प्रियता की आलोचना की है। उनके अनुसार–'गहनों का मरज बुरा मरज है, बहुत ही बुरा है।'[10] इस प्रथा से हमारा सर्वनाश होता जा रहा है। आभूषणों के प्रति इतनी आसक्ति का कारण दोषपूर्ण समाज व्यवस्था है, जिसमें गहनों को ही स्त्री की सम्पत्ति समझा जाता है।

प्रेमचन्द चरित्रवान स्त्री को महत्त्व देते है। पाश्चात्य संस्कृति को आत्मसात करने वाली नारियों का उन्होंने पतन हीं दिखाया है। गोदान की सरोज, मीनाक्षी को उन्हाने नव्य सभ्यता का शिकार बताया है। वे भारतीय नारी को संचेत करते हुए कहते ह कि – मुझे खेद है कि हमारी बहने पश्चिम का आदर्श ले रही है, जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया ह और स्वामिनी से गिरकर विलास की वस्तु बन गई है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण व शहरी नारी का चित्रण किया है किन्तु ग्रामीण नारी के चित्रण में उन्हे अधिक सफलता मिली है। ग्रामीण नारियों का अपने उपन्यासों में चित्रण करने वाले वे पहले उपन्यासकार थे।

समाज में नारी के प्रति अन्याय से वे चिंतित थे। वे मानते थे कि नारी की दुर्दशा में सैकड़ों वर्ष लगे है तो उसकी अच्छो स्थिति बनने में भी सैकड़ों वर्ष लगेंगे।

नारी के उत्थान के लिए विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं ने जो–जो कार्य किये उसके लिये प्रेमचन्द हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। उन्हाने कहा– मैं तो धन्यवाद देता हूँ, दयानंद को। उन्होंने आर्य समाज का प्रचार करके स्त्रियों और समाज का बड़ा उद्धार किया है। स्त्री जाति को आगे बढ़ाने में महात्मा जी ने भी उनका पक्ष लिया है।[11]

अनमेल विवाह से प्रेमचन्द बहुत चिंतित थे। 'निर्मला' की निर्मला, 'सेवासदन' की सुमन तथा 'प्रतिज्ञा' की सुमित्रा आदि ऐसे ही नारी पात्र है जिनका विवाह उनके माता–पिता, सगे–संबंधियों ने लोलुपतावश अथवा आर्थिक अभाव के कारण अयोग्य व्यक्ति से कर दिया। उनका एक नारी पात्र कहता है –'फिर कहती हूँ आप अपनी बालिकाओं के लिए मत देखों धन, मत देखो जायदाद, मत देखो कुलीनता, केवल वर देखो। अगर उनके लिए जोड़ का वर नहीं पा सकते तो लड़की को क्वारी रख छोड़ो, जहर देकर मार डालो, गला घोंट डालों, पर किसी बुड्ढे से मत ब्याहो।'[12]

बहुविवाह, बाल विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, अज्ञातवंशीय विवाह के प्रेमचंद समर्थक नहीं थे। कायाकल्प के चक्रधर और अहिल्या का विवाह अज्ञातवंशीय है। इसमें धर्म, जाति, पाँति , वर्ग किसी का भी ज्ञान नहीं होता है।

हमारा समाज जब तक से रूढ़िग्रस्त विचारों से मुक्त नहीं होगा तब तक अन्तर्जातीय व अज्ञातवंशीय विवाहों को अपनाने में संकोच करेगा। विधवा नारियों के प्रति अन्याय से वे चिंतित है। 'गबन' की रतन को विधवा होने के कारण पारिवारिक सम्पत्ति से वंचित किया जाता है। प्रेमचन्द विधवा विवाह के समर्थक थे, स्वयं उन्होनें बाल विधवा–शिवरानी देवी से विवाह कर इस दिशा में पहल की थी।

प्रेमचन्द नारी के वेश्या बनने में समाज की थोथी मानसिकता को दोषी मानते हैं। नारी के लिए तलाक संबंधों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। स्त्रियों पर जो अत्याचार किये जाते हैं। उनसे प्रेमचन्द बहत चिंतित थे। प्रतिज्ञा की सुमित्रा 'कायाकल्प की निर्मला, सेवा सदन की

गंगाजलि 'गोदान' की झुनिया ससुराल में अनेक प्रकार की यातनाएँ सहन करती है। प्रेमचन्द का नारी संबंधी आदर्श और जीवन दर्शन उनके पात्रों के माध्यम से स्पष्ट हुआ है।

प्रेमचन्द का मानना है कि प्रत्येक नारी अपना उद्धार चाहती है, किन्तु समाज का सहयोग नहीं मिल पाता । 'सेवासदन' की सुमन कहती है –'अगर कोई मेरी सहायता नहीं करता, न करें, मैं अपनी मदद आप कर लूँगी, केवल एक सज्जन पुरूष की आड़ चाहिए।'[13] नारी विलास मुक्त जीवन की कामना छोड़ देगी तो वेश्या समस्या पर काफी अंकुश लगेगा।

'प्रेमाश्रम' की विधावती, गायत्री, 'रंगभूमि' की इन्दु, 'गबन' की रतन, 'वरदान', की विधवा विरजन आदि के द्वारा सामाजिक कुरीतियों के कारण नारी दुर्दशा का चित्रण किया है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द की नारी दृष्टि प्राचीनता और आधुनिकता का मिश्रित रूप है। पुरातन में जो शिव है, सुन्दर है उसको अपनाते हुए आधुनिकता मैं जो कुछ सहज सत्य होने के कारण ग्राह्य है, उसे भी बिना तर्क के स्वीकार कर लेने पर वे बल देते हैं। इस प्रकार उन्होंने मिश्रित मार्ग को अपनाया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. निर्मला (प्रेमचन्द) पृ0199
2. भूत कहानी (मानसरोवर भाग–4) पृ0 175
3. कर्मभूमि (प्रेमचन्द) पृष्ठ 222
4. गोदान (प्रेमचन्द) पृ0163
5. प्रतिज्ञा पृ0 42
6. प्रेमचन्द घर में पृ0 260
7. वही पृ0 259
8. वही पृ0 259
9. प्रतिज्ञा– पृ0 142
10. गबन – पृ0 51
11. प्रेमचन्द घर में – पृ0 132
12. मानसरोवर (भाग–3) पृ0 30
13. सेवा सदन पृ0 78